RNA : Real News Analysis

DAILY CURRENT AFFAIRS

UPSC, STATE PCS, SSC, RAILWAY, BANKING, DEFENCE,
और अन्य सभी सरकारी परीक्षाओं के लिए अति महत्वपूर्ण

DATE
नवम्बर
26
2024

Key Point

1. National News
2. International News
3. Govt. Mission, Apps
4. Awards & Honours
5. Sports News
6. Economic News
7. Newly Appointment
8. Defence News
9. Important Days
10. Technology News
11. Obituary News
12. Books & Authors
13. Index

By Ankit Avasthi Sir

"जलवायु समझौता: भारत ने पैकेज को अपर्याप्त बताकर खारिज किया" / "Climate deal: India rejects package as inadequate"

हाल ही में, संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन फ्रेमवर्क सम्मेलन (UNFCCC) का 29वां सम्मेलन (COP29) बाकू, अज़रबैजान में संपन्न हुआ। इस सम्मेलन में लगभग 200 देशों ने मिलकर वैश्विक जलवायु चुनौतियों से निपटने के लिए समझौते किए।

- **नया जलवायु वित्त लक्ष्य**: COP29 में एक बड़ा कदम न्यू कलेक्टिव क्वांटिफाइड गोल ऑन क्लाइमेट फाइनेंस (NCQG) रहा। इसका उद्देश्य विकासशील देशों के लिए जलवायु वित्त को 2035 तक तीन गुना बढ़ाकर प्रति वर्ष 300 अरब अमेरिकी डॉलर करना है, जो पहले 100 अरब डॉलर था।

जलवायु वित्त पैकेज पर भारत का रुख:

भारत ने COP29 (कॉन्फ्रेंस ऑफ पार्टीज) में विकासशील देशों के लिए प्रस्तावित **300 अरब डॉलर के क्लाइमेट फाइनेंस पैकेज को खारिज कर दिया।** इसके प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं:

1. **आवश्यकताओं के मुकाबले वित्तपोषण अपर्याप्त:**
   - भारत ने कहा कि 300 अरब डॉलर की रकम विकासशील देशों की वास्तविक जरूरतों के मुकाबले काफी कम है।
2. **विकसित देशों की जिम्मेदारी पर सवाल:**
   - भारत के डेलिगेशन ने विकसित देशों पर अपनी जिम्मेदारियों को पूरा न करने का आरोप लगाया।
   - भारतीय प्रतिनिधि चांदनी रैना ने इसे "महज नजरों का धोखा" करार दिया।
3. **वित्तीय प्रस्ताव पर निराशा:**
   - भारत ने प्रस्ताव को विकासशील देशों के लिए प्रभावी समाधान के रूप में अस्वीकार्य बताया।
4. **जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए ठोस कदम की मांग:**
   - भारत ने स्पष्ट किया कि विकासशील देशों को फॉसिल फ्यूल में कमी और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से निपटने के लिए अधिक वित्तीय समर्थन की आवश्यकता है।

COP- 2025: 2025 संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन नवंबर 2025 में ब्राजील के बेलेम में आयोजित होगा।

वित्तीय सहायता की आवश्यकता क्यों?

- विकसित देशों ने ऐतिहासिक रूप से अधिक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन किया है, जिससे जलवायु परिवर्तन हुआ।
- इन देशों से उम्मीद की जाती है कि वे विकासशील और निम्न-आय वाले देशों को वित्तीय सहायता, प्रौद्योगिकी और क्षमता निर्माण में मदद करें ताकि वे जलवायु परिवर्तन से निपट सकें।

$100 बिलियन पैकेज की नाकामी:

- 2009 में विकसित देशों ने $100 बिलियन जलवायु वित्त पैकेज की घोषणा की।
- 2020 तक इसका केवल 70% लक्ष्य ही पूरा हो सका, और वह भी कर्ज के रूप में दिया गया।

विश्व के सबसे बड़े उत्सर्जक:

- चीन, अमेरिका, भारत, EU27, रूस और ब्राजील ने 2023 में विश्व के सबसे बड़े ग्रीनहाउस गैस (GHG) उत्सर्जक के रूप में योगदान दिया।
- ये देश वैश्विक आबादी का 49.8%, वैश्विक GDP का 63.2%, जीवाश्म ईंधन उपभोग का 64.2%, और GHG उत्सर्जन का 62.7% हिस्सा रखते हैं।

COP क्या है?

COP, यानी "कॉन्फ्रेंस ऑफ पार्टीज," एक अंतरराष्ट्रीय जलवायु सम्मेलन है, जो हर साल संयुक्त राष्ट्र (UN) द्वारा आयोजित किया जाता है। यह उन देशों का समूह है जो *यूएन फ्रेमवर्क कन्वेंशन ऑन क्लाइमेट चेंज* (UNFCCC) नामक अंतरराष्ट्रीय संधि में शामिल हैं।

उद्देश्य:

- इस संधि के तहत सदस्य देश (पार्टियां) जलवायु परिवर्तन से होने वाले खतरनाक मानव-जनित हस्तक्षेप को रोकने के लिए स्वैच्छिक कदम उठाने के लिए प्रतिबद्ध हैं।
- सम्मेलन में **जलवायु संकट से निपटने, कार्बन उत्सर्जन कम करने और स्थायी विकास को बढ़ावा** देने के लिए योजनाएं बनाई जाती हैं।

पहली COP बैठक (COP1):

- **साल**: 1995
- **स्थान:** बर्लिन, जर्मनी
- इस बैठक में जलवायु परिवर्तन के समाधान की रूपरेखा तैयार की गई और विकसित देशों के लिए अधिक जिम्मेदारियों को लागू करने की शुरुआत हुई।

नवीनतम COP बैठक (COP29):

- **साल**: 2024
- **स्थान:** बाकू, अजरबैजान
- इस बैठक में 300 अरब डॉलर के क्लाइमेट फाइनेंस पैकेज पर चर्चा हुई, जिसे भारत ने विकासशील देशों की जरूरतों के लिए अपर्याप्त बताया।

भारत-यूरोपीय संघ ऊर्जा पैनल बैठक / India-EU Energy Panel

हाल ही में ब्रसेल्स में भारत-यूरोपीय संघ ऊर्जा पैनल की 10वीं बैठक आयोजित हुई। बैठक में दोनों पक्षों की ऊर्जा संक्रमण प्राथमिकताओं पर चर्चा की गई और भारत-ईयू स्वच्छ ऊर्जा एवं जलवायु साझेदारी 2021-2024 के दूसरे चरण की उपलब्धियों की समीक्षा की गई।

बैठक के मुख्य बिंदु:

1. **तकनीकी सहयोग और 51 गतिविधियां पूरी की गईं:**
   - दोनों पक्षों ने 9 क्षेत्रों में विभाजित 51 गतिविधियों में तकनीकी सहयोग के तहत संयुक्त पहल पूरी की।
2. **ग्रीन हाइड्रोजन सहयोग का खाका तैयार :**
   - भारत और ईयू ने ग्रीन हाइड्रोजन नीतियों, प्रौद्योगिकी, और आपूर्ति श्रृंखला को मजबूत करने के लिए सहयोग की रूपरेखा बनाई।
3. **अंतरराष्ट्रीय ग्रीन हाइड्रोजन सम्मेलनों में भागीदारी :**
   - ईयू और उसके सदस्य देशों ने भारत में आयोजित ग्रीन हाइड्रोजन इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस 2024 में हिस्सा लिया।
   - भारत यूरोपीय हाइड्रोजन वीक 2024 का विशेष देश भागीदार बना।
4. **स्वच्छ ऊर्जा परियोजनाओं पर दीर्घकालिक शोध प्रतिबद्धताएं :**
   - भारत-ईयू ट्रेड एंड टेक्नोलॉजी काउंसिल के तहत स्वच्छ और हरित तकनीकों में संयुक्त अनुसंधान का समर्थन किया गया।
5. **तीसरे चरण (2025-2028) की कार्य योजना अपनाई गई :**
   - भारत-ईयू स्वच्छ ऊर्जा और जलवायु साझेदारी के अगले चरण में पांच प्राथमिक क्षेत्रों पर गहन सहयोग होगा:
     - ग्रीन हाइड्रोजन
     - अपतटीय पवन ऊर्जा (Offshore Wind)
     - क्षेत्रीय कनेक्टिविटी और बिजली बाजार एकीकरण
     - ऊर्जा दक्षता और स्मार्ट ग्रिड
     - ऊर्जा और जलवायु कूटनीति
6. **अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन में ईयू की भागीदारी :**
   - पैनल ने अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन (ISA) में ईयू और इसके सदस्य देशों की सक्रिय भागीदारी का स्वागत किया।
7. **जी20 और अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी के साथ सहयोग पर जोर :**
   - भारत और ईयू ने स्वच्छ ऊर्जा के लिए जी20 और अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी के साथ सहयोग को और गहरा करने पर सहमति जताई।

भारत-ईयू स्वच्छ ऊर्जा और जलवायु साझेदारी

परिचय:

- यह साझेदारी 2016 में भारत-ईयू शिखर सम्मेलन के दौरान शुरू की गई थी।
- इसका वित्त पोषण यूरोपीय संघ के पार्टनरशिप इंस्ट्रूमेंट के तहत किया जाता है और इसे भारत में यूरोपीय संघ के प्रतिनिधिमंडल द्वारा प्रबंधित किया जाता है।
- इस परियोजना के कार्यान्वयन में PwC इंडिया, NIRAS A/S, EUROCHAMBRES, और Council on Energy, Environment and Water (CEEW) साझेदार हैं।

उद्देश्य:

- स्वच्छ ऊर्जा और पेरिस समझौते के कार्यान्वयन में सहयोग को मजबूत करना।
- जलवायु अनुकूल ऊर्जा स्रोतों, जैसे सौर और पवन ऊर्जा, को बढ़ावा देना।
- ऊर्जा दक्षता (Energy Efficiency - EE), नवीकरणीय ऊर्जा (Renewable Energy - RE), और जलवायु परिवर्तन (Climate Change - CC) पर ध्यान केंद्रित करना।

प्रमुख क्षेत्र:

1. **ऊर्जा दक्षता (Energy Efficiency):**
   - **ऊर्जा संरक्षण भवन कोड (ECBC):** ऊर्जा कुशल इमारतों को बढ़ावा देना।
   - Nearly Zero Energy Building (nZEB): ऊर्जा की खपत को न्यूनतम स्तर तक लाना।
2. **नवीकरणीय ऊर्जा (Renewable Energy):**
   - **लार्ज-स्केल सोलर पीवी**: बड़े पैमाने पर सौर ऊर्जा उत्पादन।
   - **सोलर पीवी रूफटॉप**: छतों पर सौर ऊर्जा प्रणाली की स्थापना।
   - **अपतटीय पवन ऊर्जा (Offshore Wind):** समुद्री क्षेत्रों में पवन ऊर्जा उत्पादन।
   - **ऊर्जा भंडारण (Energy Storage):** ऊर्जा संग्रहण के लिए नई तकनीकों का विकास।
   - ग्रीन हाइड्रोजन: स्वच्छ ऊर्जा उत्पादन का भविष्य।
3. **जलवायु परिवर्तन (Climate Change):**
   - **अनुकूलन (Adaptation):** जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से निपटने की तैयारी।
   - **शमन (Mitigation):** ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में कमी।
   - **कूलिंग और कोल्ड-चेन:** ताप प्रबंधन और ठंडी आपूर्ति श्रृंखला के लिए उपाय।
   - **ज्ञान प्रबंधन (Knowledge Management):** जलवायु और ऊर्जा पर शोध और डेटा साझा करना।
4. **अन्य क्षेत्र:**
   - **स्मार्ट ग्रिड**: उन्नत ऊर्जा वितरण प्रणाली।
   - **सतत वित्त (Sustainable Finance):** स्वच्छ ऊर्जा परियोजनाओं के लिए वित्तीय सहायता।

वैश्विक प्लास्टिक संधि: विश्व की आवश्यकता / A Global Plastic Treaty: A Necessity for the World

दक्षिण कोरिया के बुसान में 170 से अधिक देश वैश्विक प्लास्टिक और समुद्री प्रदूषण से निपटने के लिए वैधानिक समझौते पर चर्चा कर रहे हैं। यह पांचवां और अंतिम दौर है, जिसका लक्ष्य 2024 तक इस समझौते को अंतिम रूप देना है।

प्लास्टिक प्रदूषण समाप्त करने की दिशा में वैश्विक प्रयास

पृष्ठभूमि:

1. **प्लास्टिक प्रदूषण खत्म करने का प्रस्ताव (2022):**
   - संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण सभा (UNEA) ने 2022 में प्लास्टिक प्रदूषण समाप्त करने का प्रस्ताव पारित किया।
2. **अंतर-सरकारी वार्ता समिति (INC) की स्थापना:**
   - INC को एक वैधानिक वैश्विक संधि तैयार करने का दायित्व सौंपा गया, जिसका उद्देश्य सभी देशों में प्लास्टिक उत्पादन और उपयोग को नियंत्रित करना है।
3. **वैश्विक प्लास्टिक संधि (Global Plastics Treaty):**
   - 2022 में, 175 देशों ने 2024 तक प्लास्टिक प्रदूषण पर एक बाध्यकारी समझौता विकसित करने पर सहमति जताई, ताकि प्लास्टिक उत्पादन, उपयोग और निपटान से ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में कमी लाई जा सके।

प्लास्टिक प्रदूषण से निपटने के लिए वैश्विक संधि की आवश्यकता-

1. जलवायु पर प्रभाव:

- प्लास्टिक उत्पादन से वैश्विक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन का 3.6% उत्पन्न होता है।
- इसका अधिकांश उत्सर्जन उत्पादन प्रक्रिया के दौरान होता है, जो जीवाश्म ईंधन पर निर्भर है।

2. तेजी से बढ़ता प्लास्टिक उत्पादन:

- 2000 में वैश्विक प्लास्टिक उत्पादन 234 मिलियन टन था, जो 2019 में बढ़कर 460 मिलियन टन हो गया।
- अनुमान है कि यह 2040 तक 700 मिलियन टन तक पहुंच जाएगा।
- एशिया इस उत्पादन का लगभग आधा हिस्सा बनाता है।

3. प्लास्टिक कचरे की समस्या:

- हर साल 400 मिलियन टन प्लास्टिक कचरा उत्पन्न होता है, जो 2050 तक 62% बढ़ने की संभावना है।
- केवल 10% प्लास्टिक का ही रीसाइक्लिंग होता है, जबकि शेष कचरा नदियों और महासागरों में जाकर माइक्रोप्लास्टिक में बदल जाता है।
- यह समुद्री और स्थलीय पारिस्थितिकी तंत्र को गंभीर रूप से प्रभावित करता है।

4. मानव स्वास्थ्य पर खतरे:

- प्लास्टिक में मौजूद रसायन हार्मोन को बाधित करते हैं और कैंसर, मधुमेह, प्रजनन विकार और मस्तिष्क विकास समस्याएं पैदा कर सकते हैं।

5. भारत का योगदान:

- भारत दुनिया के कुल प्लास्टिक कचरे में 20% योगदान देता है।
- हर साल भारत से 9.3 मिलियन टन प्लास्टिक उत्सर्जन होता है।

वैश्विक प्लास्टिक संधि पर भारत का दृष्टिकोण-

1. **प्लास्टिक उत्पादन पर प्रतिबंध का विरोध:**
   - भारत पॉलीमर उत्पादन पर सीमाओं का विरोध करता है, इसे UNEA 2022 के प्रस्ताव के दायरे से बाहर मानता है।
2. **वित्तीय और तकनीकी सहायता की मांग:**
   - भारत संधि में वित्तीय मदद, तकनीकी सहयोग और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण को अनिवार्य बनाने पर जोर देता है।
3. **हानिकारक रसायनों का नियमन:**
   - प्लास्टिक में उपयोग होने वाले हानिकारक रसायनों पर निर्णय वैज्ञानिक आधार पर हो और इसका नियमन राष्ट्रीय स्तर पर किया जाए।
4. **प्लास्टिक उपयोग समाप्ति पर व्यावहारिक दृष्टिकोण:**
   - 2022 में भारत ने 19 श्रेणियों के सिंगल-यूज़ प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगाया।
   - भारत मानता है कि संधि में चरणबद्ध तरीके से प्लास्टिक समाप्ति का निर्णय स्थानीय परिस्थितियों को ध्यान में रखकर होना चाहिए।
5. **सुरक्षित कचरा प्रबंधन की आवश्यकता:**
   - भारत वैज्ञानिक और सुरक्षित कचरा प्रबंधन के लिए संरचना आकलन, वित्तीय आवश्यकताओं और स्थिर फंडिंग के लिए तंत्र की मांग करता है।

तेलंगाना सीआईआई के साथ संयुक्त परामर्श समिति की स्थापना करेगा / Telangana to Establish Joint Consultative Committee with CII

तेलंगाना सरकार भारतीय उद्योग परिसंघ (CII) के साथ उद्योगों पर एक संयुक्त सलाहकार समिति के गठन और वैश्विक क्षमता केंद्र (GCC), आईटी और उद्योगों पर नई नीतियों को लागू करने पर विचार कर रही है।

- इस समिति का उद्देश्य राज्य में औद्योगिक चुनौतियों का समाधान करना है।

जीसीसी नीति (GCC Policy)

तेलंगाना सरकार जल्द ही **ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर्स (GCC)** के लिए एक नई नीति जारी करेगी। इस नीति का उद्देश्य हैदराबाद को वैश्विक कंपनियों के लिए प्रमुख स्थान के रूप में स्थापित करना।

प्रमुख बिंदु:

1. **मुख्य उद्देश्य:**
   - हैदराबाद को वैश्विक कंपनियों के लिए आकर्षक केंद्र बनाना।
   - जीवन विज्ञान (Life Sciences) और **बैंकिंग, वित्तीय सेवाएं, और बीमा (BFSI)** जैसे क्षेत्रों को प्राथमिकता देना।
2. **फायदे:**
   - अंतरराष्ट्रीय कंपनियों को आकर्षित करने के लिए राज्य की संभावनाओं को बढ़ावा देना।
   - उद्योगों में निवेश और नवाचार को बढ़ावा देना।
3. **नई नीतियां:**
   - जीसीसी नीति के साथ-साथ **नई आईटी और उद्योग नीतियां** भी तैयार की जा रही हैं।
   - ये नीतियां राज्य के औद्योगिक परिदृश्य की बदलती जरूरतों को पूरा करेंगी।

संयुक्त सलाहकार समिति का गठन (Constitution of a Joint Consultative Committee):

मुख्य बिंदु:

1. **समिति की संरचना:**
   - इसमें **उद्योगों के विशेष मुख्य सचिव** और **CII के नेता** शामिल होंगे।
2. **प्रेरणा:** यह समिति **केरल के सफल मॉडल** पर आधारित होगी।
3. **उद्देश्य:**
   - औद्योगिक मुद्दों का प्रभावी समाधान करना।
   - उद्योगों के विकास में सहयोग बढ़ाना।

सरकार की नई पहलें

प्रमुख बिंदु:

1. **एमएसएमई नीति**: सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योगों (MSMEs) के लिए नई नीति लागू।
2. **यंग इंडिया स्किल्स यूनिवर्सिटी:** सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP) के तहत **यंग इंडिया स्किल्स यूनिवर्सिटी** की स्थापना।
3. **खाद्य प्रसंस्करण उद्योग पर ध्यान:** ग्रामीण अर्थव्यवस्था को समर्थन देने के लिए **खाद्य प्रसंस्करण उद्योग** को बढ़ावा।

तेलंगाना: एक परिचय

तेलंगाना, भारत का 29वां राज्य, 2 जून 2014 को औपचारिक रूप से स्थापित हुआ। यह राज्य आंध्र प्रदेश से विभाजित होकर बना है। **'तेलंगाना'** शब्द का अर्थ है **'तेलुगूभाषियों की भूमि'**। यह क्षेत्र पहले स्वतंत्र भारत के हैदराबाद रियासत का हिस्सा था, जो 17 सितंबर 1948 को भारत में विलय हुआ।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि:

1. **राज्य निर्माण का संघर्ष:**
   - अलग तेलंगाना राज्य बनाने के लिए लंबे समय तक आंदोलन और प्रयास किए गए।
   - 18 फरवरी 2014 को तेलंगाना विधेयक लोकसभा में पारित हुआ और 20 फरवरी 2014 को राज्यसभा से भी मंजूरी मिली।
   - राष्ट्रपति के हस्ताक्षर के बाद, तेलंगाना भारत का 29वां राज्य बन गया।
2. **संयुक्त राजधानी:**
   - हैदराबाद को 10 वर्षों के लिए तेलंगाना और आंध्र प्रदेश की संयुक्त राजधानी घोषित किया गया।

जनसंख्या और भाषा:

1. **धार्मिक जनसंख्या:**
   - 84% हिन्दू
   - 12.4% मुस्लिम
   - 3.2% सिक्ख, ईसाई और अन्य धर्मों के अनुयायी।
2. **भाषाई विविधता:**
   - 76% लोग तेलुगू बोलते हैं।
   - 12% लोग उर्दू और शेष 12% अन्य भाषाएं बोलते हैं।

वर्तमान नेतृत्व:

- **मुख्यमंत्री:** अनमुला रेवंत रेड्डी (पदभार: 7 दिसंबर 2023)
- **राज्यपाल**: श्री जिष्णु देव वर्मा

तेलंगाना का महत्व:

- तेलंगाना, भारत का एक प्रमुख सांस्कृतिक, आर्थिक और भाषाई विविधता वाला राज्य है।
- यह राज्य अपने ऐतिहासिक स्मारकों, चारमीनार, गोलकोंडा किला और रामोजी फिल्म सिटी जैसे स्थलों के लिए प्रसिद्ध है।

व्यापार और आर्थिक साझेदारी समझौते (TEPA) की कार्यान्वयन स्थिति / Implementation Status of Trade and Economic Partnership Agreement (TEPA)

हाल ही में वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के वाणिज्य विभाग के सचिव, श्री सुनील बर्थवाल, ने वरिष्ठ अधिकारियों के साथ नॉर्वे का दौरा किया। इस यात्रा का मुख्य उद्देश्य भारत और नॉर्वे के बीच व्यापार और आर्थिक साझेदारी समझौते (TEPA) को मजबूत करना, भारतीय वस्तुओं और सेवाओं के निर्यात के लिए EFTA देशों के बड़े बाजार को खोलना और $100 अरब के निवेश को जल्द लागू करने के प्रयासों को आगे बढ़ाना था।

व्यापार और आर्थिक साझेदारी समझौते (TEPA) के बारे में-

- **हस्ताक्षर:** TEPA को मार्च 2024 में भारत और चार EFTA देशों - आइसलैंड, लिकटेंस्टीन, नॉर्वे और स्विट्जरलैंड के बीच हस्ताक्षरित किया गया।
- **EFTA की पेशकश:**
  - 92.2% टैरिफ लाइनों पर शुल्क छूट प्रदान करता है।
  - भारत के 99.6% निर्यात को कवर करता है।
  - 100% गैर-कृषि उत्पादों के लिए बाज़ार तक पहुंच और प्रोसेस्ड कृषि उत्पादों (PAP) पर टैरिफ रियायतें शामिल हैं।
- **भारत की पेशकश:**
  - 82.7% टैरिफ लाइनों पर शुल्क छूट प्रदान करता है।
  - EFTA के 95.3% निर्यात को कवर करता है।
- **सेवाओं में समझौते:**
  - भारत ने EFTA को 105 उप-क्षेत्रों की पेशकश की है और नॉर्वे से 114 उप-क्षेत्रों में प्रतिबद्धताएं प्राप्त की हैं।
  - TEPA भारत के सेवा निर्यात को बढ़ावा देगा, खासकर IT सेवाएं, व्यावसायिक सेवाएं, व्यक्तिगत, सांस्कृतिक, खेल और मनोरंजन सेवाएं, अन्य शैक्षिक सेवाएं, और ऑडियो-विजुअल सेवाओं जैसे क्षेत्रों में।
  - **EFTA द्वारा सेवाएं:**
    - डिजिटल माध्यम से सेवाओं की बेहतर पहुंच (Mode 1)।
    - वाणिज्यिक उपस्थिति (Mode 3) में सुधार।
    - प्रमुख कर्मियों के प्रवेश और अस्थायी प्रवास (Mode 4) के लिए प्रतिबद्धताओं और निश्चितता में वृद्धि।

TEPA के मुख्य क्षेत्र:

1. **सेवा क्षेत्र (Service Sectors):**
   - TEPA भारत के सेवा निर्यात को बढ़ावा देगा, खासकर IT, व्यावसायिक सेवाओं, शिक्षा, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और ऑडियो-विजुअल सेवाओं में।
   - EFTA निम्नलिखित के लिए बेहतर सुविधाएं प्रदान करता है:
     - **डिजिटल सेवाओं का वितरण** (Mode 1)।
     - **वाणिज्यिक उपस्थिति स्थापित करना** (Mode 3)।
     - **प्रमुख कर्मियों की आवाजाही** और अस्थायी प्रवास (Mode 4)।
2. **निर्माण क्षेत्र पर प्रभाव (Impact on Manufacturing):**
   - TEPA भारत के घरेलू निर्माण को समर्थन देगा, खासकर इन क्षेत्रों में:
     - इंफ्रास्ट्रक्चर, फार्मास्यूटिकल्स, रसायन, खाद्य प्रसंस्करण, लॉजिस्टिक्स, और बैंकिंग।
3. **तकनीकी और अनुसंधान सहयोग (Technology and R&D Collaboration):**
   - नवीकरणीय ऊर्जा, स्वास्थ्य विज्ञान, सटीक इंजीनियरिंग और नवाचार जैसे क्षेत्रों में उन्नत तकनीकों और सहयोग को प्रोत्साहन।

भारत के लिए संभावित लाभ

- **रोजगार सृजन:** भारत के युवा कार्यबल के लिए सीधे रोजगार के अवसर पैदा करेगा।
- **कौशल विकास:** व्यावसायिक और तकनीकी प्रशिक्षण के अवसरों का विस्तार।
- **तकनीकी सहयोग:** सटीक इंजीनियरिंग, नवीकरणीय ऊर्जा, स्वास्थ्य विज्ञान और अनुसंधान एवं विकास (R&D) में उन्नति।
- **निर्यात में वृद्धि:** भारत के 99.6% निर्यात को EFTA देशों में बाज़ार तक पहुंच मिलेगी।
  - $100 अरब निवेश को प्रोत्साहित करेगा।

दिल्ली प्रदूषण: ग्रैप-4 / Delhi Pollution: Graph-4

हाल ही में दिल्ली में प्रदूषण के बढ़ते स्तर को लेकर सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई हुई, जिसमें कोर्ट ने निर्देश दिया कि प्रदूषण में सुधार होने तक दिल्ली में ग्रैप-4 के प्रावधान लागू रहेंगे।

दिल्ली में वायु प्रदूषण की स्थिति

- **एयर क्वालिटी इंडेक्स (AQI):**
  - दिल्ली का 24 घंटे का औसत AQI 318 दर्ज किया गया।
  - यह पिछले दिन के 412 की तुलना में बेहतर है।
  - वायु गुणवत्ता अभी भी स्वास्थ्य के लिए खतरनाक है।
- **पीएम 2.5 का स्तर:**
  - पीएम 2.5 का स्तर 138 पर मापा गया।
  - वाहनों से उत्सर्जन का योगदान 18.1% और पराली जलाने का 19% रहा. पीएम 2.5 का स्तर 138 मापा गया
- **निगरानी केंद्रों का डाटा:**
  - दिल्ली के 38 निगरानी केंद्रों में से किसी ने भी गंभीर श्रेणी में AQI दर्ज नहीं किया।
  - पिछले दिन 20 निगरानी केंद्रों ने गंभीर स्तर पर वायु गुणवत्ता मापी थी।

AQI क्या है

- **अर्थ:**
  - AQI (Air Quality Index) एक ऐसा पैमाना है, जो हवा में प्रदूषण के स्तर को मापने का काम करता है।
  - यह हवा में मौजूद CO (कार्बन मोनोऑक्साइड), ओजोन, NO2 (नाइट्रोजन डाइऑक्साइड), PM 2.5 और PM 10 जैसे पॉल्यूटेंट्स की मात्रा को शून्य से 500 तक के स्तर पर दर्शाता है।
- **कैसे काम करता है AQI:**
  - AQI को एक थर्मामीटर की तरह समझा जा सकता है, जो तापमान की बजाय प्रदूषण को मापता है।
  - हवा में पॉल्यूटेंट्स की मात्रा जितनी अधिक होती है, AQI का स्तर उतना ही अधिक होता है।
- **उच्च AQI के खतरे:**
  - 200 से 300 के बीच का AQI खराब माना जाता है।
  - 400 से ऊपर का AQI गंभीर स्वास्थ्य खतरे का संकेत देता है।
  - राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली, और उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में AQI 400 के पार जा चुका है, जो हवा की अत्यधिक खराब स्थिति को दर्शाता है।
- **स्वास्थ्य पर प्रभाव:**
  - बढ़ता हुआ AQI केवल एक संख्या नहीं है, बल्कि यह गंभीर बीमारियों जैसे सांस की समस्याओं और हृदय रोगों के खतरे का संकेत है।

AQI के स्तर और उनके स्वास्थ्य प्रभाव:

1. **0-50 (Good - अच्छी):**
   - स्वास्थ्य के लिए सुरक्षित।
2. **51-100 (Satisfactory - संतोषजनक):**
   - मामूली प्रदूषण, संवेदनशील व्यक्तियों को हल्की असुविधा हो सकती है।
3. **101-200 (Moderate - मध्यम):**
   - बच्चों, बुजुर्गों और रोगियों को हल्की स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं।
4. **201-300 (Poor - खराब):**
   - फेफड़े और हृदय रोगों से ग्रस्त लोगों को स्वास्थ्य समस्याओं का खतरा।
5. **301-400 (Very Poor - बहुत खराब):**
   - सभी लोगों पर स्वास्थ्य प्रभाव, खासकर संवेदनशील समूहों पर।
6. **401-500 (Severe - गंभीर):**
   - स्वास्थ्य के लिए अत्यंत खतरनाक; लंबे समय तक संपर्क घातक हो सकता है।

ग्रैप 4 क्या है?

ग्रैप (Graded Response Action Plan) वायु प्रदूषण से निपटने के लिए एक त्वरित उपाय योजना है। जब दिल्ली में वायु गुणवत्ता "गंभीर प्लस" स्तर पर पहुंच जाती है और AQI 450 से ऊपर हो जाता है, तब ग्रैप 4 लागू होता है। इसके तहत:

- डीजल से चलने वाले भारी वाहनों पर प्रतिबंध।
- आवश्यक वस्तुओं को छोड़कर ट्रकों का प्रवेश रोकना।
- स्कूलों को बंद करना।
- वर्क फ्रॉम होम का सुझाव देना।

दिल्ली प्रदूषण के प्रमुख कारण:

1. वाहनों से उत्सर्जन
2. निर्माण कार्य
3. पराली जलाना
4. औद्योगिक उत्सर्जन
5. ठंडे मौसम में धुंआ
6. जलवायु परिवर्तन

विकसित भारत युवा नेतृत्व संवाद / Developed India Youth Leadership Dialogue

प्रधानमंत्री ने जनवरी में दिल्ली में 'विकसित भारत युवा नेतृत्व संवाद' (VBYLD) आयोजित करने की घोषणा की, जो स्वामी विवेकानंद की 162वीं जयंती के अवसर पर होगा। उन्होंने इस अवसर पर युवाओं के विकास में राष्ट्रीय कैडेट कोर (NCC) की भूमिका को भी विशेष रूप से रेखांकित किया।

'विकसित भारत युवा नेतृत्व संवाद' (VBYLD): युवा सशक्तिकरण की नई पहल-

- यह संवाद देशभर के उन युवाओं को राजनीति में जोड़ने का प्रयास करेगा जिनका कोई राजनीतिक पृष्ठभूमि नहीं है। यह युवा सशक्तिकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है।
- इस कार्यक्रम में 2,000 चयनित युवाओं को भाग लेने का अवसर मिलेगा। प्रधानमंत्री स्वयं राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञों के साथ संवाद करेंगे, जिसमें देश की प्रगति के लिए नवीन विचार प्रस्तुत किए जाएंगे। यह भारत के भविष्य के लिए एक ठोस योजना बनाने में सहायक होगा।

राष्ट्रीय कैडेट कोर (NCC): युवाओं में नेतृत्व और सेवा भावना का विकास-

- **स्थापना और उद्देश्य:**
  - राष्ट्रीय कैडेट कोर (NCC) की स्थापना 1948 में एच. एन. कुंजरू समिति (1946) की सिफारिश पर, NCC अधिनियम, 1948 के तहत की गई थी।
  - इसका उद्देश्य युवाओं में चरित्र निर्माण, नेतृत्व क्षमता, मित्रता और सेवा भाव विकसित करना है।
- **रक्षा और आपातकालीन योगदान:**
  - NCC का एक उद्देश्य युवाओं में राष्ट्रीय रक्षा के प्रति रुचि बढ़ाना और आपातकालीन स्थितियों में सशस्त्र बलों के लिए एक रिजर्व तैयार करना भी है।
- **इतिहास:**
  - NCC का पूर्ववर्ती संगठन यूनिवर्सिटी कोर (1917) था, जो बाद में यूनिवर्सिटी ट्रेनिंग कोर (UTC) (1920) और फिर यूनिवर्सिटी ऑफिसर्स ट्रेनिंग कोर (UOTC) (1942) में परिवर्तित हुआ।
- **नेतृत्व और संचालन:**
  - NCC का संचालन लेफ्टिनेंट जनरल रैंक के एक सेना अधिकारी द्वारा किया जाता है, जो दिल्ली स्थित मुख्यालय से इसका नेतृत्व करते हैं।

स्वामी विवेकानंद: प्रेरणा के स्रोत

- **जन्म:** 12 जनवरी 1863 (नरेंद्रनाथ दत्त), कोलकाता के बंगाली कायस्थ परिवार में।
- **गुरु:** रामकृष्ण परमहंस, जिनसे आध्यात्मिक प्रेरणा पाई।
- **योगदान:**
  - हिंदू धर्म, वेदांत और योग का पश्चिमी दुनिया में प्रचार।
  - 1893 शिकागो धर्म महासभा में ऐतिहासिक भाषण, जिसने अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाई।
- **संस्थाएं:**
  - भारत में रामकृष्ण मठ और रामकृष्ण मिशन की स्थापना।
  - अमेरिका में वेदांत सोसाइटी की स्थापना।
- यात्रा: पूरे भारत में घूमकर समाज की समस्याओं का अध्ययन और सेवा का संकल्प।
- समाज सुधारक: राष्ट्रवाद को बढ़ावा और हिंदू धर्म को वैश्विक पहचान दिलाई।
- **सम्मान:**
  - भारत में राष्ट्रीय युवा दिवस (12 जनवरी) के रूप में जन्मदिन मनाया जाता है।
  - आधुनिक भारत के महानतम विचारकों और देशभक्त संतों में से एक।

कूनो नेशनल पार्क / Kuno National Park

मध्य प्रदेश के कूनो नेशनल पार्क में मादा चीता निर्वा ने शावकों को जन्म दिया है। वन्यजीव अधिकारियों ने सोमवार को यह जानकारी दी। निर्वा को 2022 में दक्षिण अफ्रीका से यहां लाया गया था और पिछले कुछ हफ्तों से उसमें गर्भावस्था के संकेत दिखाई दे रहे थे।

कूनो नेशनल पार्क में चीता पुनर्वास परियोजना: वर्तमान स्थिति

पिछले एक वर्ष से कूनो नेशनल पार्क (केएनपी) में 24 चीते – 12 वयस्क और 12 शावक – बाड़ों के अंदर रखे गए हैं। इन्हें पिछले साल 13 अगस्त को बाड़ों में लाया गया था, जब उससे पहले के महीने में तीन वयस्क चीतों की मृत्यु सैप्टिसीमिया (रक्त संक्रमण) के कारण हुई थी। उनकी सर्दियों की घनी खाल के नीचे हुए घावों में कीड़े लगने से यह संक्रमण हुआ था।

चीता पुनर्वास परियोजना:

- इस परियोजना का उद्देश्य चीतों को स्वतंत्र रूप से जंगल में विचरण करने योग्य बनाना था।
- हालांकि, अधिकांश चीते अभी भी संरक्षित बाड़ों में ही हैं और उन्हें जंगल में छोड़ने के लिए राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (NTCA) की अनुमति का इंतजार है।
- अधिकारियों के अनुसार, चीतों को चरणबद्ध तरीके से जंगल में अक्टूबर के अंत से छोड़ा जाना था, लेकिन यह प्रक्रिया अब तक शुरू नहीं हो सकी है।

उपलब्धियां और चुनौतियां:

- पिछले दो वर्षों में केएनपी में भारतीय भूमि पर कुल 12 चीता शावकों का जन्म हुआ है।
- हालांकि, परियोजना को कई झटके भी लगे हैं, जिसमें आठ वयस्क चीते और पांच शावकों की मृत्यु शामिल है।

चीता परियोजना:

- **परियोजना का उद्देश्य:**
  चीतों को भारत में फिर से बसाने के लिए **'प्रोजेक्ट चीता'** शुरू किया गया।
  भारत में चीते **1952 में विलुप्त** घोषित किए गए थे।
- **प्रारंभिक प्रक्रिया:**
  - चीतों को शुरुआत में कम से कम एक महीने के लिए **सुरक्षित बाड़े** में रखा जाता है।
  - यह प्रक्रिया उन्हें केंद्रित क्षेत्र से जुड़ने में मदद करती है।

कूनो राष्ट्रीय उद्यान: एक परिचय

स्थान और नामकरण:

- कूनो राष्ट्रीय उद्यान, मध्य प्रदेश के श्योपुर और मुरैना जिलों में स्थित है।
- इसका नाम कूनो नदी के नाम पर रखा गया है।

स्थापना और विकास:

- 1981 में इसे वन्यजीव अभयारण्य के रूप में स्थापित किया गया था।
- इसका प्रारंभिक क्षेत्रफल 344.68 वर्ग किलोमीटर था।
- 2018 में इसे राष्ट्रीय उद्यान का दर्जा दिया गया, और इसका क्षेत्र 413 वर्ग किलोमीटर बढ़ाया गया।

पर्यावरणीय महत्व:

- यह खठियार-गिर शुष्क पर्णपाती वन क्षेत्र का हिस्सा है।
- यह वन्यजीव संरक्षण और पुनर्वास के लिए एक महत्वपूर्ण स्थान है।

प्रमुख परियोजनाएं:

1. **एशियाई शेर पुनर्वास परियोजना:**
   - 1990 के दशक में इसे एशियाई शेरों के दूसरे आवास के रूप में चुना गया।
   - 1998-2003 के बीच 24 गांवों के लगभग 1,650 निवासियों को पुनर्वासित किया गया।
   - हालांकि, गुजरात ने शेरों को स्थानांतरित करने का विरोध किया, और यह परियोजना आगे नहीं बढ़ सकी।
2. **चीता पुनर्वास परियोजना:**
   - 2009 में इसे भारत में चीतों को पुन: स्थापित करने के लिए प्रस्तावित किया गया।
   - सितंबर 2022 में नामीबिया से 8 चीतों को यहां लाया गया।
   - फरवरी 2023 में 12 और चीतों को उद्यान में लाया गया।
   - मार्च 2023 में 4 चीता शावकों का जन्म हुआ।

महत्व:

- कूनो राष्ट्रीय उद्यान एशियाई शेर और चीता पुनर्वास जैसी परियोजनाओं के लिए एक महत्वपूर्ण केंद्र बन गया है।
- यह भारत के वन्यजीव संरक्षण और जैव विविधता बढ़ाने के प्रयासों का प्रमुख हिस्सा है।

AI की तैयारी वाले टॉप-10 देशों में शामिल हुआ भारत / India is included in the top 10 countries prepared for AI

बीसीजी (Boston Consulting Group) की रिपोर्ट में भारत ने AI तैयारियों के मामले में दुनिया के शीर्ष 10 देशों में अपनी जगह बनाई है। यह उपलब्धि देश की बढ़ती विशेषज्ञता और नवाचार को दर्शाती है।

- AI विशेषज्ञों की संख्या में भारत दूसरा स्थान पर है।
- AI अनुसंधान प्रकाशनों में भारत ने तीसरा स्थान प्राप्त किया।
- यह रिपोर्ट 73 देशों का मूल्यांकन करती है।
- रिपोर्ट का ध्यान AI के जरिए सार्वजनिक सेवाओं में सुधार पर केंद्रित है।

भारत में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) का क्षेत्रीय प्रभाव

AI ने भारत के विभिन्न महत्वपूर्ण क्षेत्रों में क्रांतिकारी परिवर्तन लाए हैं। निम्नलिखित प्रमुख क्षेत्रों में AI का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है:

- **व्यवसाय सेवाएं (GDP का 16%)**: AI सरकारी कार्यों को अधिक कुशल बनाता है, जिससे संचालन में सुधार होता है।
- **खुदरा (GDP का 10%)**: AI आपूर्ति श्रृंखलाओं को बेहतर बनाता है और कचरे को कम करता है।
- **सार्वजनिक सेवाएं (GDP का 6%)**: आपातकालीन प्रतिक्रिया प्रणाली और सेवा वितरण को सुधारने में मदद करता है।
- **कृषि (GDP का 17%)**: सटीक खेती (Precision Farming) के माध्यम से AI उत्पादकता में वृद्धि और जोखिम प्रबंधन में सुधार करता है।
- **निर्माण (GDP का 8%)**: AI अवसंरचना योजना में सुधार करता है और परियोजनाओं की दक्षता बढ़ाता है।
- **कला और व्यक्तिगत सेवाएं**: AI के माध्यम से सार्वजनिक सुविधाओं का प्रबंधन और अधिक प्रभावी बनता है।

AI अपनाने की चुनौतियां और सिफारिशें

भारत ने AI के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण प्रगति की है, लेकिन इसके पूर्ण उपयोग के लिए कुछ चुनौतियां भी हैं। 70% से अधिक देशों को कौशल विकास और पारिस्थितिकी तंत्र में भागीदारी की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। AI की पूरी क्षमता को प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित सिफारिशें दी गई हैं:

- **बुनियादी ढांचा और अनुसंधान का विकास**: AI अनुसंधान केंद्रों और क्लाउड सुविधाओं की स्थापना की आवश्यकता है।
- **कार्यबल प्रशिक्षण**: विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में कौशल विकास पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए ताकि प्रतिभा अंतर को कम किया जा सके।
- **नीतियां और विनियमन**: AI में पूर्वाग्रह को रोकने और पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए नैतिक दिशानिर्देश तैयार किए जाएं।

सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP) का महत्व

AI के विकास में सार्वजनिक-निजी भागीदारी (Public-Private Partnerships – PPPs) का महत्वपूर्ण योगदान है। यह सहयोग नवाचार को बढ़ावा देने, संसाधन साझा करने और बुनियादी ढांचे के विकास में सहायक होते हैं।

PPP के फायदे:

- **नवाचार को बढ़ावा मिलता है**: सरकारी और निजी क्षेत्र का सहयोग नए विचारों और तकनीकी विकास को उत्पन्न करता है।
- **संसाधन साझा होते हैं**: सार्वजनिक और निजी क्षेत्र मिलकर अधिक संसाधनों का उपयोग करते हुए अधिक प्रभावी परिणाम हासिल कर सकते हैं।
- **बुनियादी ढांचे में सुधार**: दोनों क्षेत्र मिलकर बुनियादी ढांचे का निर्माण और सुधार करते हैं, जिससे अधिक स्थिरता और विकास होता है।
- **आर्थिक विकास में योगदान**: PPP से विकासशील क्षेत्रों में निवेश बढ़ता है, जिससे आर्थिक विकास और रोजगार सृजन में मदद मिलती है।

AI के फायदे:

1. **उत्पादकता में वृद्धि**: AI स्वचालन बढ़ाता है, जिससे उत्पादन क्षमता में सुधार होता है।
2. **सटीकता**: AI त्रुटियों को कम करता है, जैसे मेडिकल निदान में सटीकता।
3. **समय की बचत**: AI निर्णय जल्दी लेता है, जिससे समय की बचत होती है।
4. **नवाचार**: नए उत्पाद और सेवाएँ विकसित होती हैं।
5. **डेटा एनालिटिक्स**: AI बड़े डेटा का विश्लेषण करके बेहतर निर्णय लेने में मदद करता है।

AI के नुकसान:

1. **रोजगार पर असर**: AI से नौकरियाँ घट सकती हैं।
2. **डेटा सुरक्षा खतरे**: AI के जरिए डेटा की गोपनीयता खतरे में आ सकती है।
3. **गलत निर्णय**: कभी-कभी AI गलत निर्णय ले सकता है।
4. **पूर्वाग्रह**: AI में गलत डेटा से पूर्वाग्रह उत्पन्न हो सकता है।
5. **सामाजिक असमानता**: AI के उपयोग से समाज में असमानताएँ बढ़ सकती हैं।

"GET READY FOR A WILD RIDE OF KNOWLEDGE !"

SUBSCRIBE OUR NEW YOUTUBE CHANNEL

ANKIT AVASTHI

Video will be upload soon !

RRB NTPC

TEST SERIES

- 100+ Mock Test
- 78 Sectional Test
- 40+ years PYPs
- 60+ Current affairs

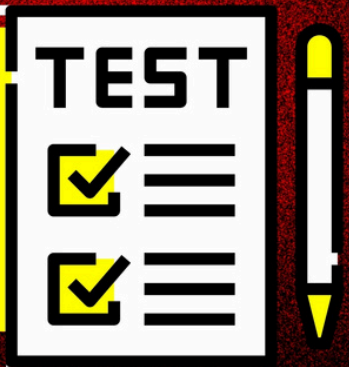

Only 99 Per Year

Buy Now

GA FOUNDATION

Hand Written Notes

Apni Pathshala
एक कदम उज्ज्वल भविष्य की ओर

Ankit Inspires India

₹ Only 1999

4 पुस्तकों का सम्पूर्ण सेट

अधिक जानकारी के लिए दिए गए नंबर पर संपर्क करें....

7878158882

APNI PATHSHALA

UPPSC,RO/ARO,BPSC,UP TEST SERIES

UPPSC
(TEST SERIES)
- 35+ MOCK TESTS
- 40+ PYQ'S
- 180+ TOPIC WISE TEST
- 60+ CURRENT AFFAIRS

299/- YEAR

RO/ARO
(TEST SERIES)
- 50+ MOCK TESTS
- 30+ PYQ'S
- 10+ TOPIC WISE TEST
- 65+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 299/- YEAR

BPSC
(TEST SERIES)
- 50+ MOCK TESTS
- 30+ PYQ'S
- 10+ TOPIC WISE TEST
- 65+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 299 YEAR

SSC (TEST SERIES)
- 30 MOCK TESTS
- 28+ YEAR PYP
- 12 SECTIONAL TEST
- 60+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 99/- YEAR

RPF (TEST SERIES)
- 40 MOCK TESTS
- 2 YEAR PYQ'S
- 4 SECTIONAL TEST
- 10 PRACTICE TEST
- 60 CURRENT AFFAIRS

ONLY 99/- YEAR

Download | Application

Apni Pathshala

7878158882

Apni.Pathshala Avasthiankit

AnkitAvasthiSir kaankit

ANKIT AVASTHI SIR

NCERT COMPLETE

FOUNDATION BATCH

FOR ALL

- POLITY
- ECONOMICS
- HISTORY
- GEOGRAPHY

- DAILY LIVE CLASSES
- , WEEKLY TEST
- CLASSES PDF (HINDI+ENGLISH)
- LIVE DOUBT SESSIONS
- DAILY PRACTISE PROBLEM

Rs 4999/-

Apni Pathshala 7878158882 Apni.Pathshala kaankit AnkitAvasthiSir Avasthiankit

ONLY POLITY

1499 RS

- DAILY LIVE CLASSES
- , WEEKLY TEST
- CLASSES PDF (HINDI+ENGLISH)
- LIVE DOUBT SESSIONS
- DAILY PRACTISE PROBLEM

Apni Pathshala 7878158882 Apni.Pathshala kaankit AnkitAvasthiSir Avasthiankit

SSC TEST SERIES

CGL, CHSL, MTS, CET, CPO, GD,

Stenographer (Grades C & D)

Only at

99/-Year

Enroll Now !